Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

ॐ

27-2-2014

सदगुरू वाणी (7)

सभी पुण्यआत्माओं को मेरा नमस्कार - - -

इस विश्व मे परमात्मा की शक्ती कणकण मे व्याप्त है। और जहाँ वह सामुहीकता मे है। वहा हमे उसका एहसास होता है। ऐसे ही किसी चैतन्ययुक्त स्थान पर बैठ कर ८०० साल पुर्व एक "माध्यम" ने इस अनुभुती को प्राप्त किया। और प्राप्त करने के बाद यह इच्छा की यह "अनुभुती" सारे संसार को प्राप्त हो। याने इस "अनुभुती" का मुख्य स्त्रोत "साक्षात विश्वचेतनाशक्ती" ही है, लेकीन उस शक्ती को ग्रहण कर सके इतना रिक्त वह "माध्यम" अपने आप को कर पाया था। उसने ग्रहण किया और अपने ही जिवनकाल मे ही अपने किसी शिष्य मे स्थापीत कर के देह त्याग किया।

(1) माध्यम

इस नये "माध्यम" ने भी अपने जिवनकाल मे इस अनुभुती के ज्ञान को संभाला और अपना योगदान दिया और फिर अपने जिवन के "उत्तरार्ध" मे किसी अपने शिष्य मे स्थापीत कर अपने गुरु के दर्शन किये। और यही परम्परा ८०० सालो से चली आ रही है। यह ज्ञान की नदी सालो से यात्रा इसलीये कर रही है, की सामुहीकता के सागर मे एक दिन मीले और इस यात्रा मे "माध्यम" बदलते गये लेकीन प्रगती की दिशा एक ही थी "लक्ष्य" एक ही था "समुद्र" को जाकर मिलना इसी महान और विशाल लक्ष्य को देखकर ही कई मुनीयो ने "कैवल्यकुंभक" योगीयो ने "जैन मुनीयो" ने "बौध्द" साधुओ ने "मुस्लीम फकीरो" ने इसके "माध्यमो" को आर्शिवादीत किया है, एक ही माध्यम समाज तक पहुच पाया इसलीये समाज को केवल एक ही "माध्यम" की जानकारी है, यह तो माध्यमो की शृंखला है, जो "माध्यम" के साथ सदैव सुक्ष्म स्वरूप मे होती ही है, लेकीन दिखता केवल माध्यम है, क्योकी वही पास है, वही करीब है, उसे ही लोग देख पाते है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

महत्वपुर्ण है। आत्मज्ञान को सर्वसामान्य मनुष्य तक पहुचाना यह "ज्ञानयज्ञ" है। माध्यम तो आये और चले गये अपने जिवन की आहुती ज्ञानयज्ञ मे देकर भी उन्होने इस ज्ञानयज्ञ को कभी भी बुझने नही दिया और ८०० साल तक ज्ञानयज्ञ चलता ही रहा यह एक "तपस्या" है, जो "तपस्या" आज ८०० सालो से अविरत चल रही है। इस का प्रांरभ भी माध्यम ही है। और अंत भी माध्यम ही है। इन तपस्या के समय शरीर बदले हो आकार बदले हो, रुप बदले हो भितर का स्वरुप एक ही है। भितर की "शुध्द इच्छा एक ही है। और प्रत्येक माध्यम ने अपने भितर के "स्वरुप" को दुसरे माध्यम मे स्थापीत कर "गुरुदर्शन" किये है, इसी माध्यमो कि श्रृखला के "अंतीम माध्यम" के जिवनकाल मे आप जी रहे है। अब यह शुध्द इच्छा रुपी नर्मदा भरुच मे सागर मे विलीन हो रही है, अब से नर्मदा नदी, नदी नही कहलायेगी क्योकी वह सागर मे विलीन हो गयी है, ठीक इसी प्रकार अब माध्यम भी अब माध्यम नही रहेगा वह सामुहीकता का सागर कहलायेगा। माध्यम ने भी अपना "अस्तीत्व" आठ मंगल मुर्तीयो मे स्थापीत कर दिया है, और साथ संकल्प किया है, की अगले ८०० वर्षो तक जो भी पवीत्र आत्मा आकर इसके सानीध्य मे "आत्मज्ञान" प्राप्त

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

करने की इच्छा करेगी उस आत्मा को आत्मा का साक्षात्कार होगा, यह संकल्प करके इस श्रृंखला के अंतिम माध्यम ने भी अपने भितर का "गुरुतत्व का प्रवाह" इन आठ मंगलमुर्तीयो मे प्रस्थापीत किया है, इन के भितर का यह "चैतन्य का प्रवाह" माध्यम के बाद भी निरंतर चलता रहेगा, माध्यम महत्वपुर्ण नही है, महत्वपुर्ण है, "आत्मज्ञान" का खजाना वह बचा रहना चाहीये प्रत्येक गुरु को अपने से भी अधीक प्रिय होता है। ज्ञान जो उसके भितर रहता है। माध्यम का आठ मंगल मुर्तीयो का संकल्प था जो इस गहन ध्यान अनुष्ठान के साथ ही पुर्ण हो गया है, अब आगे गहन ध्यान अनुष्ठान होगा या नही, पता नही, हो सकता है, की यह आखरी ही गहन ध्यान अनुष्ठान हो अब तो माध्यम का संकल्प भी पुर्ण हो गया अब माध्यम इस "संकल्प" से भी "मुक्त" हो गया है, जो संकल्प पिछले आठ साल से लगातार चल रहा था।। अब आगे अगर कुछ गुरुकार्य हुआ तो वह गुरुशक्तीयो की इच्छा से ही संभव है, अब माध्यम की कोई इच्छा ही नही है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(२)
आठवाँ गहनध्यान

अब जब ये आठ गहन ध्यान अनुष्ठान पुर्ण हो गये है, तब पिछे मुड कर आठ सालो मे देखता हुँ तो लगता है, गहन ध्यान अनुष्ठान मे भितर क्या प्रक्रीया हो रही है, और इसके लिये क्या वातावरण की आवश्यकता है, क्या पवीत्रता की आवश्यकता है, शुध्दता की आवश्यकता है, इसका तनीक भी ज्ञान नही था, आत्मीयता का बहुत ही अभाव था हम कहाँ रह रहे है, हम कहा है, किसके साथ है, भितर क्या साधना हो रही है, इसका इन्हे कुछ ज्ञान नही था और न इधर चित्त भी था वे अपने ही रोजमर्रा की बातो मे ही उलझे रहते थे।

और बाहर की इन सब बातो की तकलीफ मुझे भितर साधना मे होती थी अब जो भी लोग मिले इन्ही को लेकर मैने साधना पुर्ण की क्योकी मै एक संकल्प से जुडा था। और गहनध्यान अनुष्ठान मे साधना कर के भी फल मिलता था वह सब मै मेरे माध्यमो मे याने ट्रस्टीयो मे बांट देता था, और आज लगरहा है। बांटी गयी उर्जा शक्ती "ट्रस्टीयो" ने निष्क्रीय हो कर गंवा दी याने उर्जाशक्ती का भी अपव्यय हुआ है, और समय भी बरबाद हुआ है, यह "हमारी संस्था" की सबसे बडी हानी है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

अब मेरा संकल्प पुर्ण हो गया है, अब आगे अगर यह अनुष्ठान हुआ तो व्यवस्थीत होगा। या नही होगा, क्योंकी अब संकल्प पुर्ण हो गया है,

श्री मंगलमुर्ती की प्राणप्रतीष्ठा बडी जटील और कठीन प्रक्रीया होती है। प्रथम तो मुर्ती का ही शुध्दीकरण करना होता है, क्योंकी प्रथम धातु का शुध्दीकरण करना होता है। उन खानीको का उन व्यापारीयो का जिनके माध्यम धातुओ का हस्तान्तरण हुआ बाद मे उन मुर्तीकार और उसके कारागीरोंका, इस मुर्ती के लीये जिन्होने धन दान कीया उनका, जिन साधको की मदत से यह स्थापित हुयी उनका इन सब की मंगल की कामना करने बाद कही मुर्ती के प्राणप्रतीष्ठा की विधी प्रारंभ होती है, प्रथम पुर्व दिशा से गुरु शक्तीयो को आव्हान किया जाता है, बाद मे दक्षीण दिशा से आव्हान किया जाता है। बाद मे पश्चीम दिशा से आव्हान कीया जाता है, और अंत मे उत्तर दिशा से आव्हान कीया जाता है, इसके बाद ही शक्तीयो को मुर्ती मे स्थापीत कीया जाता है, जब "प्राण प्रतीष्ठा" प्रारंभ होती है, तब मंगलमुर्ती की चैतन्य शक्ती 0 शुन्य होती है, और मेरी 100%.

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥

|| Whole World is a Family ||

बाद मे गहन ध्यान अनुष्ठान के अंतीम आठ दिनो मे
हम दोनो 50%. 50%. होते समान स्थीती मे आ जाते
है।
अब समस्या निर्माण यह हो जाती है, की मुर्ती मे प्राण
डालकर वापस शरीर मे रोज आना होता है और
रोज आना बडा कठीण होता है, क्योंकी दोनो जगह समान
स्थीती होती है। फीर वापस आने के लीये मैं अलग२
प्रयोग करते रहता हुं। साधारण तह मे बाद का गुरुकार्य
निश्चीत कर लेता हुं जैसे इस बार जैनमुनीयो के साथ
मार्च मास मे शिबीर निश्चीत कीया है 30 का शिबीर
राजकोट मे रखा है ऐसे प्रोग्राम रखकर जाता, तो लोगों
यह करना है वह समझाना पडता है। यह सब मुर्ती
मे बैठकर तो नही हो सकता इसलीये मुर्ती मे
से बाहर निकलना आवश्यक है। दुसरा केवल चित्त से
मुर्ती मे जाकर बैठता नही हुं. एक "संकल्प" के साथ
बैठता हुं. की जो भी मनुष्य जो भी इच्छा लेकर
आये वह दर्शनमात्र से पुर्ण होना चाहीये भले ही
दर्शनार्थी "आत्मसाक्षात्कार" मांगे तो भी वह उसे
प्राप्त होना चाहीये. दुसरा मुर्ती मे बैठने के बाद
जब ध्यान करता हुं, तो वह ध्यान की स्थीती उस

मूर्ति को प्राप्त हो जाती है, यही कारण है कि वह स्थिति के कारण ही उसे निर्विचार चैतन्य प्राप्त हो जाता है, याने यह बड़ा ही "जोखिम" का कार्य होता है, मूर्ति में से वापस शरीर में आना कोई आवश्यक नहीं होता। शरीर के समकक्ष ही "मूर्ति" हो जाती है। और अगर कोई दिन वापस नहीं आये तो वह "मृत्यु" ही कहलायेगी. इसीलिये प्रत्येक गहनध्यान अनुष्ठान के बाद मैं अपना नया जन्म ही समझता हूँ, मूर्ति में स्थापित होने के बाद ऐसा अनुभव होता है कि मानो एक उच्च शिखर "कैलाश" पर आप पहुँच गये हो। और काफी ऊपर पे पहुँचे है तो आपको तो वही रह जाने की इच्छा होगी नीचे आने को मन ही नहीं करेगा। बीलकुल वही स्थिती होती है मूर्ति से बाहर आने की इच्छा ही नहीं होती और दूसरा (3) नकारात्मक शक्तीयाँ सदैव साधकों के ही माध्यम से गहनध्यान में ऐसी खराब स्थिती निर्माण करते है, की मैं वापस शरीर में ही न आऊँ. नकारात्मक शक्तीयाँ स्वयंम् कभी नहीं आ सकती है सदैव "साधकों के माध्यम" से ही आयेगी. और हर वर्ष आती ही है, साधक अलग२ होते है. लेकिन "उद्धेश्य" एक ही होता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

इस बार भी हुआ है। इस बार और नाजुक स्थीती है, क्योंकी आठ मंगल मुर्तीयो का संकल्प भी पुर्ण हो रहा है। यानी संकल्प का सहारा भी बाहर निकलने का कारण नही होगा देखते है, आगे क्या होता है। मेरे हाथ मे कुछ नही है वैसे भी मेरे हाथ मे कभी कुछ रहा ही नही है; परमात्मा जिसे भी अपना "माध्यम" बनाता है, उसके पास उसने किया कहने को कुछ नही होता है। मेरे गुरुदेव कहते थे तेरी पत्नी "शक्तीस्वरुपा" है, वह मुझे याद आ रहा है। जिवन मे घर के कार्य हो, स्कुल के कार्य हो, बच्चो के कार्य हो, समाज के कार्य हो रिश्तेदारो के कार्य हो, घर को चलाने का कार्य हो, सभी मोर्चे पर सदैव पत्नी ही खडी रहती है, मै सदा ही पिछे रहता आया हुं, आज लाखो साधक है, सैकडो आचार्य है, उसनभर इस्टी है। लेकीन फीर भी आज भी "गुरुमाँ" को ही आश्रम की जमीन बचाने के लीये पोलीस स्टेशन, और कोर्ट, के चक्कर काटना पड रहे है। आज भी वही "मोर्चे" पर है। मै पिछे रहा हु और आज भी हुं, पिछे ही हुं। रात्र दम सुरक्षीत.

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

इस गहनध्यान अनुष्ठान मे साधको का कितना समर्पण भाव है, कितना लगाव आश्रम से है, यह सब स्पष्ट हो गया है, की उन्हे क्या हो रहा है, इसका पता ही नही होता.

मेरे गुरुदेव कहते थे की तेरी पत्नी शक्तीस्वरूपा है, सो मुझे आज लग रहा है. मै राहु अगरबत्ती के समान उसके और आपके सामने जल रहा हुं, और जो चैतन्य की खुशबु मेरे जलने होती है, उस खुशबु से आप प्रसन्न होते हो परमात्मा का माध्यम कुछ शरीर से को इसी स्थीती मे कभी नही होता इसी लीये मैने कीया यह कहने का अवसर उसके पास नही होता गहनध्यान अनुष्ठान कीतना भितर से गहन है, इसकी कल्पना आपको नही है. कम से कम इस अनुष्ठान मे तो भी हो इसी लीये यह सब स्पष्ट किया है, गुरु के साथ सदैव गुरु की शक्तीया होती है, बाधाऐ आ सकती है, तो केवल और केवल साधको के ही माध्यम से आप यहाँ से कुछ न प्राप्त कर सको तो कम से कम दुसरो को तो कुछ पाने दो और कर्म. जबकी सत्य यह है, की केवल "गुरुमाँ" ही मुझे बाहर लाने मे समर्थ है

यह अष्टम गहन ध्यान अनुष्ठान तो मुझे एक "आयना" ही लगा जिसमे हमे हमारी स्थिती क्या है। यह पता चल गया और इतने पवित्र अनुष्ठान का हमने क्या क्या दुरुपयोग कीया है।

जैसे की गुरुशक्तीयो को पता था की आगे क्या होने वाला है। इसलीये गुरुशक्तीयो ने अपना उत्तराधीकारी घोषीत कर दिया तो उनकी दुर्घटना हो सकती है, इस लीये "मुंबई मॅरोथॉन" मे मत जाओ यह अफवा उडायी गयी, दुसरा यह मॅरोथॉन मे भाग लेना संस्था से "अधीकृत" नही यह दुसरी अफवा उडायी गयी। जब की कच्छ के चैतन्य महोत्सव मे इन्होने स्वयम सभी को आने का आव्हान किया था, और ये सभी बाते साधको के माध्यम से नकारात्मक शक्तीयो ने की है, अब यह किसने कीया है, उसके नाम लेकर मै उन्हे आत्मग्लानी मे नही डालना चाहता लेकीन वे स्वयम आत्मचिंतन करे की इतने अनुष्ठान के समय मे भी अगर मै "नकारात्मक शक्तीयो" का माध्यम बन सकता हूँ, तो मेरा "विश्वास" और "समर्पण" कितना गुरुशक्तीयो के प्रति है।

मुझे आपकी स्थीती पर भी "दया" ही आती है।

आपके जिस रंग के कपडे पहने होते है, वही रंग आप लोगो को दिखाते है, और लोग वही रंग देखते भी है,

(4) प्रभाव

इस लीये आप अपने आप को जो समझते हो वही लोग भी आपको वही समझते है, आप जिस स्थिती मे आकर बात करते वैसा ही "प्रभाव" आपका सामने वाले पर पडता है, अब सामान्य तह मनुष्य जब भाषण देता है, तो वह केवल दो चक्रो की उर्जा इस्तेमाल करता है, वह स्वाधीष्ठान और विशुद्धी याने वह विचार करता है, सोचता है, और फीर बोलता है, और सोचता क्या है, कीस "पुस्तक" मे क्या लिखा था और मै क्या पढा था याने बोलते समय उसका चित्त कीसी पुस्तक पर होता है, और पुस्तक सामान्य तह निर्जीव होती है, पुस्तके सदैव निर्जीव रहती ऐसा नही (कई पुस्तके है जो लिखी गयी तो शरीर से है, लेकीन उसका मुल लेखक अलग ही होता है, ऐसी पुस्तके लिखने वाला केवल एक माध्यम ही होता है, अब प्रश्न है, येह पुस्तको की जानकारी कैसे है, और हमने कितनी पढी है,) अब अगर निर्जीव पुस्तक पर चित्त रख कर बोलेगे तो हमारी वाणी मे "चैतन्य" कैसे होगा वह बात बुद्धीस्तर पर होगी और सामने वाले को प्रभावीत भी करेगी

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

लेकीन सामने वाले के समझ मे नही आयेगी। तो फीर आपके भाषण का क्या उपयोग है, आपकी बात उसने सुनी और दुसरे कान से निकाल दी। और जितना मै का "अंहकार" रखोगे भाषण उतने ही निचले स्तर पर होगा. इसीलिये सदैव प्रवचन देते समय प्रथम "गुरुचरणो" पर चित्त को स्थिर करता हु, तो स्वाभावीक रुप से चित्त सहस्त्रार पर चला ही जाता है। और इससे हमारे सभी चक्र खुल जाते है, और आपकी स्थिती एक पाईप जैसी हो जाती है। और विश्वचेतना के हम "माध्यम" बन जाते है, फीर जो सचमुच ज्ञान है, वह चैतन्य के रुप मे हमारे भितर से बहना प्रारंभ हो जाता है, और हमारी "वाणी" से भी चैतन्य बहने लग जाता है, दुसरा हम यह सब शरीर से करते नही है। इसलीये ही तीन तीन घंटे बीना रुके बीना पानी पिये बोल पाते है। क्योंकी शरीर का कोई रोल ही नही होता है। इसलीये थकान भी नही लगती है, और न प्यास लगती है, सोचना पुस्तक के लीखे को याद करना यह सब शरीर की क्रीयाए भी नही होती है। इसलीये प्रथम ध्यान नियमीत करो और फीर बाते करो।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥
|| Whole World is a Family ||

भाषा की सामुहीकता

अब बात करे भाषा की तो मै एक पवीत्र आत्मा हु। मै एक शुद्ध आत्मा हु। यह मंत्र तो मै जन्म से ही इस मुल स्वरुप मे ही बोल रहा हु जब की बचपन मे मुझे हिन्दी भाषा भी नही आती थी और यह सब पुर्व जन्म के प्रभाव के कारण होगा।

यह भी हो सकता है की यह मंत्र प्रथम संस्कृत भाषा मे हो और बाद मे हिन्दी मे आया हो लेकीन मै बचपन से हिन्दी मे ही बोल रहा था। दुसरा यह मुह से नही बोलता था इसका नाद अंदर ही अंदर चलते रहता था। आप जब कभी मेरे सानिध्य मे बैठकर उच्चारण करके ध्यान करते है, तो इस का उच्चारण आपके भितर ही भितर चलते रहता है। आप मुह से उच्चारन नही करते लेकीन आपके भितर ही भितर इसका उच्चारण चलते रहता है, ठीक इसी प्रकार से मेरे भितर भी यह चलते रहता था। मैने तो प्रयोग करके भी देखा है, आप भी प्रयोग करके देखो यह मंत्र आप दुनीया की कीसी भी भाषा मे बोलो यह उतना प्रभावशाली नही है, जितना यह हिन्दी भाषा मे होता है. कभी क्या कारण होगा सोचा है. क्योकी इस मंत्र को सामुहीकता हिन्दी भाषा मे ही प्राप्त हुयी

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(6) सत्य का चैतन्य

है, इस मंज का उद्देश हम एक आत्मा है। सदैव केवल
इसी बात का एहसास दिलाना है,
आत्मा की शक्ती पवीत्रता पर ही आधारीत है। आध्यात्मीक
जिवन की निंव ही पवीत्रता पर ही रखी गयी है। पवीत्रता
आशय हम केवल शरीर की पवीत्रता से लगाते की नहा धोकर
धार्मीक अनुष्ठान करने चाहीये लेकीन पवीत्रता का अर्थ
बडा विशाल है। आपके विचार सदैव ही पवीत्र हो आपका
चित्त भी सदा पवीत्र बना रहे। किसी भी प्रकार का
चित्त मे आया विचार भी चित्त की पवीत्रता को भंग
करता है, याने आप विचारो से भी पवीत्र हो और
चित्त से भी पवीत्र हो। और मै एक शुद्ध आत्मा हुँ
यहाँ शुद्ध का अर्थ "सत्य" से है। आप यह पुर्ण नह
मान रहे है। की आप एक आत्मा है, यही एकमात्र
सत्य है। इसी लीये जब कभी आप "सत्य" बोलते है,
तो सत्य का चैतन्य आपके मुख से निकलता है,
सदैव "सत्य" बोलने वालो के वाणी मे एक प्रकार
की शक्ती निर्माण हो जाती है, फिर उनके मुंह
से जो भी निकलता है, शक्तीया उन्हे सत्य
करती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

आज पहले जैसी स्थीती नही है आज सायन्स ने बहुत प्रगती की है। आज से २५ साल पहले जब चक्र के बारे मे ओरा के बारे बोलता था तो डॉ. साधक कहते थे। हम सर्जन है। शरीर के प्रत्येक अंगो को हमने देखा है। लेकीन शरीर के भितर "चक्र" कही भी नजर नही आये वह नजर इसलीये नही आते क्योंकी वे सुक्ष्मस्वरूप मे है। लेकीन "ओरा" को देख सके ऐसे तो यंत्रभी आ गये है। हो सकता है। की कल कोई नयी मशीन आये जो चक्रो को भी दिखा सके।

सांयन्स को अभी कई और खोजो तक पहुचना बाकी है। आज न कल प्रगती होगी हमारे शास्त्रो मे शरीर के भितर के चक्रो का उल्लेख मिलता है। अभी हाल ही मैने एक प्रयोग किया एक बडी कटोरी मे "गुलाबजल" भर लो उस कटोरी को सुक्ष्मशरीर के फोटो के सामने रखो और उस गुलाबजल को आशिर्वादीत करने के लीये तीन बार "गुरुमंत्र का उच्चारण करके प्राथना करो और बाद मे उसी जल मे एक छोटा टॉवेल भीगोकर आप उस गुलाब जल से अपने सपुर्ण शरीर को पोछ ले तो आप के आभामंडल मे "पवीत्रता" और "शुध्दता" का अनुभव होगा। जब स्नान करने की व्यवस्था न हो वहाँ यह प्रयोग आसानी से किया जा सकता है।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

हमारे आसपास का और जमीन ऊर्जा का प्रभाव हमारे वस्त्रो पर पडता ही है।
इसलिये जबभी आपको थकावट लगे मानसीक तनाव लगे आप प्रवास कर के आये हो, भीडभाड मे आये हो आप घर आकर कपडे बदल ले। आपको एकदम अच्छा लगेगा, क्योकी आसपास के वातावरण का प्रभाव हमारे वस्त्रो पर ही पडता है। दुसरा हमे रोज सुबह उगते सुरज के सामने ध्यान करना चाहीये इससे हमारा ध्यान अच्छा भी लगता है। और उसी समय साधक सामुहीकता मे ध्यान करते है। उस सामुहीकता का हमे लाभ भी मिलता है, और उस समय सारी शक्तीया भी उर्ध्वगामी होती है, और इसी कारण हमारी भीतर की भी ऊर्जा शक्ती उर्ध्वगामी होने मे हमे सहायता मिलती है, दुसरा शाकाहारी लोगो मे वैसे भी वीटामीन "डी" की मात्रा कम ही पायी जाती है, वह वीटामीन "डी" की कमी हम धुप मे बैठने से पुर्ण कर सकते है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

(8)

रूप और स्वरुप

परमात्मा निराकार स्वरुप मे है। लेकिन उस तक पहुचने का
मार्ग साकार रुप मे होता है। अगरबत्ती संपुर्ण जल भी जाये
तो भी कितने ही समय तक उस अगरबत्ती की खुशबु
वातावरण मे होती ही है।
ठीक इसी प्रकार से परमात्मा इस पृथ्वी पर आया और
चला भी गया । आया अलग अलग "माध्यम" से आया
लेकिन माध्यम को उसके जिवनकाल मे कोई जान नही
सका वह इस लीये जान नही सका क्योकी माध्यम ने
धारण किया रुप उसके "स्वरुप" के आडे आ गया
रुप नाशवान है। लेकीन स्वरुप शाश्वत है। रुप
चले जाने के बाद भी स्वरुप रहता ही है, और
फीर केवल स्वरुप ही रहता है तो उसे आसानी से
पहचाना जा सकता है। "माध्यम" रुप है, और मंगल
मुर्तीया "स्वरुप" है। कल रुप नही होगा पर स्वरुप
मंगलमुर्तीयो के माध्यम से होगा ही गुरुशक्तीयो
का कार्य भी भवीष्यकाल को देख कर ही किया
जा रहा है। भौतीकशास्त्र का नियम है, कोई वस्तु
नष्ट नही होती है, केवल "रुप" का परिवर्तन
होता है। यह भी वैसा ही है, जब रुप न
होगा तो रुप ही स्वरुप बनकर आगे आ

गुरुकार्य करेगा। और अगले ८०० वर्षों के संकल्प तक चलता ही रहेगा। ⑨ समाधी

जीवन के दो सीरे है, जिवन और मृत्यु याने जन्म होना और मृत्यु को प्राप्त होना। यह "सृष्टी" का नियम है। और यह नियम समान रुप से सभी पर लागु होता है, यह का यह नियम "सदगुरु" पर भी लागु होता है। सदगुरु के जिवन देह से परे जाना और देह मे वापस आ जाना यह प्रक्रीया उसके "साधना" का ही एक भाग होती है, और इस आने और जाने की प्रक्रीया से शरीर का रोम रोम अभ्यस्थ होना है, जिस शरीर पर शरीर का नियत्रंण ही न हो और सालो से "आत्मा" का ही नियत्रंण हो तो उस शरीर का अणु रेणु भी आत्मबल से प्रभावीत होना है। और आत्मा का प्रभाव उसकी "समाधी" पर भी अनुभव होता है, क्या कारण है, कभी सोचा है, की "समाधी" के पास जाकर क्यो हमे अच्छा लगता है, क्यो प्रसन्नता लगती है। क्योकी उस "समाधी" के भितर वह शरीर रखा होता है। जो अपने जिवनकाल मे लाखो आत्माओ से जुडा था और लाखो आत्माऐ उसके साथ जुडी थी।

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

इसी कारण एक सामुहीक शक्ती उस शरीर के साथ-
जुडी होती है।
अब हम थोडा इसी विषय को और विस्तृत रूप मे समझते
है। अब शरीर तो नाशवान है, शरीर तो "समाधी" मे
रखने बाद शरीर तो गल जाता होगा। नष्ट हो जाता
होगा। बराबर है, "समाधी" मे कुछ दिनो के बाद शरीर
का मांस और शरीर नष्ट हो जाता है, लेकीन शरीर के-
भितर की जो "हड्डीयाँ" है, वह सदैव विधमान रहती है-
है। और यह "हड्डीयाँ" ही है। जिनसे सालो तक चैतन्य
का प्रभाव आसपास के वातावरण पर मिलो तक-
अनुभव होता है, मेरे बचपन मे मुझे भी दधीची ऋषी
की कहानी थी। जिनकी "हड्डीयो" से इन्द्र भगवान ने
अपना "वज्र" बनाया था। और उस "वज्र" को बनाने
के लिये उन्होने अपने प्राण त्याग दिये थे। याने
राक्षसो को मार सके इतनी उर्जा उस "हड्डीयो"
मे थी और यह सब उन्होने की जिवनभर की
तपस्या के कारण ही थी और उस हड्डीयो से-
बने "वज्र" से राक्षस का वध कीया था,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

याने प्राचीन समय से ही यह जाना जाता है, की जिस मनुष्य ने जैसा जिवन जीया है, उसका प्रभाव उसके शरीर की "हड्डीयों" के माध्यम से उसके समाधीस्थ होने के बाद भी बना रहता है।

यही कारण है, की हम श्री रमण महर्षी के आश्रम अरुणाचलम मे जाते है, तो हमारी समाधी लग जाती है। हम शिर्डी मे श्री साईबाबा के "समाधी" के पास जाते है, तो हमे समाधी लग जाती है, याने सद्गुरु ने जो सामुहीकता अपने जिवन काल मे बना कर रखी थी वही सामुहीकता की शक्ती "समाधीस्थ" होने के बाद उनके "समाधी" के पास अनुभव होता है, केवल समाधी के पास ही नही आसपास के समुचे क्षेत्र मे समाधी से निकलने वाली उर्जा बहती रहती है। ये "हड्डीयो" से बहने वाले चैतन्य के बारे मे हम अभी नही जानते है, लेकीन मेरे साधना के समय की घटना है, एक हाथी के बच्चे की माँ मर गयी थी तो भी वह हाथी का बच्चा बडा हो कर भी उसी स्थान पर अपने माँ की हड्डीयो के चैतन्य को

प्रदान कर के आता ही था, यानें इन हड्डीयो से चैतन्य का ज्ञान हाथीयो को होता है,
सामान्य मनुष्य और सद्गुरु इन दोनो मे अन्तर जीने का ही होता है, सामान्य मनुष्य शरीर से जीता है, और "सद्गुरु" आत्मा से जीता है, और यही अन्तर सद्गुरु की "समाधी" को जीवंतता प्रदान करता है, और यही कारण है, की सद्गुरु की समाधी बनायी जाती है, ताकी सद्गुरु के समाधीस्थ होने के बाद भी उनकी सामुहीकता की उर्जा बनी रहे है, और आने वाली कई पिढीयो को वह मार्गदर्शन कर सके उस "समाधी" के सानीध्य मे जाकर एक सामान्य मनुष्य भी शांती और सुख का अनुभव कर सके सद्गुरुओ के माध्यम की "समाधी" की उर्जा तो मंगलमुर्तीओ के स्वरुपो से साथ जोडी गयी है, इन सारी मंगलमुर्तीयो को माध्यम बना कर सामुहीकता की उर्जा सारे विश्व मे फैलायी जायेगी गुरुशक्तीयो की एक बडी योजना भवीष्य के लिये बन गयी है, माध्यम के शरीर त्यागने के साथ ही यह सुक्ष्म प्रक्रिया प्रारंभ हो जायेगी।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

अभी हाल ही मे मैंने श्रीलंका की यात्रा की वहाँ केंडी शहर मे एक गौतम बुद्धजी के "दांत" का ही मन्दीर है। उस मन्दीर मे भी दर्शन कीये तो जाना की। उस दांत के चैतन्य को भी मीलो दुर से ही अनुभव किया जा सकता है।

ठिक इसी प्रकार से काश्मीर मे एक पवीत्र स्थान है, जहाँ एक "पवीत्र बाल" रखा गया है, इस लीये उस स्थान" एकबाल साहाब" कहते है। याने जो भी विश्वचेतना के माध्यम होते है। उनको उनके जिवन मे कम ही लोग जानते है, लेकीन यह माध्यम अपना देह त्यागने के बाद दांत, बाल नाखुन, हड्डीयो के कारण से भी अपनी चैतन्य शक्ती से सामान्यजन को प्रभावीत करते रहते है। इसमे सबसे अधीक होती है। "हड्डीयाँ" इन "हड्डीयों" मे बाद मे एक प्रकार चुंबकीय तत्व निर्माण हो जाता है। और दुनीयाभर से लोग इन हड्डीयो के ढांचे की ओर ही खिचे चले आते है, क्योकी वह उन्हे आत्मशांती प्रदान करती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

अंहकार युक्त दान

अब एक अंहकारी साधक का अनुभव आप को बताता हुं।
मैं बार बार कहता हुं। की अंहकार के साथ कीया गया
पुवकर्म हमे सदगुरु के पास तो ले जाता है, लेकीन
सदगुरु के पास रखता नही यह उदाहरण आपको इस
लिये दे रहा हुं ताकी आप दान सदैव आत्मा से करे अपने
शरीर के "अंहकार" से नही और न ही "अपेक्षा" से करे
दान सदैव आत्मा की "प्रसन्नता" के लीये कीया जाना
चाहीये,
ऐसे ही एक पुराने मेरे करीब के साधक थे श्री विपीनभाई
परेल इन्होने ने पुर्वजन्म मे बहुत पुण्यकर्म किये थे।
लेकीन "अंहकार" के साथ किये थे और यह बात मैं
पहले से जान गया था "अमलसाड" के शिबीर से ही
मेरी उनसे पहचान हुयी थी उनकी अन्य कोई साधको से
कभी नही बनती थी केवल मैं ही था जो उनके पास
का था और मैं कहता भी था की मेरे साथ कीसी
की भी बने तो कोई नयी बात नही है. क्योंकी
मेरी इस दुनीया मे सभी के साथ ही बनती है।
आशाबाग मे ऑफीस था और आश्रम के लीये
जगह खोजने का कार्य सभी ट्रस्टी कर रहे थे
और कई साधक भी कर रहे थे।

मै लंदन मे रमेश पटेल नामक साधक के घर था तो इनका मुझे फोन आया स्वामीजी मैने आश्रम के लिये "दांडी" मे जगह खोज ली है, मै आपको आपके जन्मदीन पर भेट करना चाहता हु।

आप कृपया कीसी को मत बताइये मै सबके सामने आपको जमीन देकर सभी को चौका दुगां, मैने कहा ठीक है। "भावनगर" मे जन्मदिन का कार्यक्रम हुआ उन्होने दांडी की 750-751-752-753-754 यह टुकडो वाली जमीन हजारो साधको के सामने भेट की बाद मे मैने उन्हे ही प्रोजेक्ट का लीडर बनाकर वह सब जमीन की खरीदी और NA का कार्य सोंप दिया बाद मे वे ही कार्य देख रहे थे, उनके नेतृत्व मे दांडी से आश्रम तक रोड बिजली की लाईन पांचो टुकडो को कंपाउन्ड लगाना कच्चे झोपडे बनाना बाद मे सब उनको पुछ२ कर के ही आश्रम के सभी कार्य होते थे, और मेरा यह की जब मै कीसी पर विश्वास करता हु तो पुर्ण ही करता हु। मैने इन पर भी पुर्ण विश्वास कीया अन्य आश्रमो के लिये जमीन देखने भी इन्ही को लेकर जाता था।

इनके कार्य के बीच कभी कोई दखल भी नही आते थे,
क्योकी यह स्वामीजी का आदमी है,
मैं ही इन्हे बुला बुला कर उनको सौंपे हुये कार्य की जानकारी
लेता था. एक तो मेरी स्वंयम की एक कोई भी जमीन
नही है, इसलीये जमीन का मुझे कोई अनुभव नही था
ये इनके बडे जानकार थे, ये जो बोलते वहा दस्ती
सही करते थे ये जो बोलते वहा दस्ती पेपर भी भरते
थे, ऐसा चलता रहा लेकीन साल साल मे NA नही-
हुआ. दिन प्रती साधको की संख्या बढ रही थी नये
बांधकाम की आवश्यकता थी, २००५ मे अजमेर मे शिवीर
हुआ वहां से श्री दिपक शर्माजी जुडे उन्हे भी इस बाबद
जानकारी थी मैंने उन्हे भी इनके साथ जोड दिया
और अन्य तीन और साधक दिये ताकी जल्दी कार्यवाही
हो सके, बाद मे यह कॅनडा जाने की बात करने
लग गये तो मैंने कहा आप सब पेपर्स साधको
सौंपजाओ इसके पुर्व इन्होंने 250-752 की रजीस्ट्री
अपने पत्नी के नाम पर करके बाद मे आश्रम-
के नाम मे दे दी थी. लेकीन बाकी 3 जमीन
के टुकडे बाकी थे,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

ये बीना कोई पेपर्स कीसी को दिये केनडा चले गये बाद मे आकर उन्होने 750 टुकडा अपने पत्नी के नाम पर कर लीया। और आज आश्रम के नाम पर करता हु। कल करता हु कहते गये, लेकीन वह टुकडा उन्होने आश्रम के नाम पर नही कीया,

बाद मे मुझे मिले बोले मेरा भाव अब बदल गया। अब वह टुकडा मै देना नही चाहता और बाद मे उस टुकडे की दसगुना कीमत मांगने लग गये मेरी स्थीती तो ऐसे हो गयी की मै अपने घर मे आराम से बैठा था मुझे मुंबई जाना था और ये आये आओ मै तुम्हे मुंबई छोड देता हु। और मनोर के जंगल मे उतार दिया की अब दस हजार रुपये दो तो मुंबई छोडता हु, अगर मुंबई छोडना ही नही था तो घर से क्यो ले गये और आप नही छोडते तो और कोई छोडता था। याने इतनी कम जगह देने वाले रहते तो आश्रम बनाने का निर्णय ही नही लेते इस प्रकार से इन्होने मुझे एक सबक सीखाया। और इस सबक से मै और मेरे साधक यह सिखे की कीसीसे भी दान मे जमीन ही मत लो जमीन सामुहीक प्रयास से ही खरीदो, और बाद मे वही कीया गया.

इस साधक ने समय पर NA नही किया इसी लीये ट्रस्ट
को 1.5 करोड की राशी जुरमाने के रुप मे सरकार को देना
पडी है। क्योकी यह जमीन मैने दान कर दी है। अब आगे
सभी खर्चे सरकार को ट्रस्ट ही भरे यह जवाबदारी उसने
ट्रस्ट पर डाल दी है।

अब यह सब प्रकरण न्यायालय मे चल रहा है,
16 जनवरी कोर्ट की तारिख थी बाद मे उन्होने प्रार्थना
करके 13 फरवरी तारिख मांग ली थी, इसी बीच उन्होने
4 फरवरी सरकारी अधीकारीयो और पोलीस की सहायता
से आये और उक्त 750 वाली जमीन पर कब्जा करके
अपना कम्पाउंड होक लीया यानी उन्होने उन अधीकारीयो
को और पोलीस को भी अंधेरे मे रखा की कोर्ट का केस
चल रहा है, यह बात सबसे छुपायी अब तो
कोर्ट की भी अवमानना उन्होने की है, याने मनुष्य
एक कर्म गलत करता है, तो नकारात्मक शक्तीया
उससे आगे के गलत कर्म करा लेती है, इसीलीये
मेरे गुरु कहते थे की जिवन मे पहला कर्म जो
भी करो वह सोच समझ कर करो यह इस
बात का उदाहरण है,

दांडी का भविष्य

(11) (२३)

ग्लोबल वॉर्मींग के कारण भविष्य मे समुद्र का जलस्तर बढने वाला है। और यह दांडी आश्रम और आसपास की सारी जमीन डुबने वाली है,

यह न हो इसी लीये गुरुशक्तीयों की इच्छा थी की माध्यम की "समाधी" दांडी मे हो ताकी कम से कम ८०० साल तो भी यह भाग प्रकृती के प्रकोप से सुरक्षीत रह सके। दुसरा एक जिवंत समाधी अगर दांडी मे होती तो समुचा दक्षीण गुजरात का क्षेत्र भी उस समाधी के प्रभाव मे आता और दक्षीण गुजरात के समुचे क्षेत्र की युवाशक्ती को एक नयी आध्यात्मीक उर्जा और प्रेरणा मीलती और दक्षीण गुजरात मे एक पवीत्र स्थान निर्माण होता जहाँ दुनीया भर से लोग आकर आत्मज्ञान और आत्मशांती को प्राप्त करते आज के दुनीयाभर के साधको का यह दांडी आश्रम ध्यान का स्थान होता और सारी दुनीया से लोग आते "नवसारी" का व्यापार व्यवसाय भी बढता, लेकीन अब यह सब न हो सकेगा।

// जय बाबा स्वामी //

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

दक्षीण गुजरात को नुकसान (29)

लेकीन केवल एक साधक के अंहकार ने गुरुशक्तीयो की भावी योजना पर पानी फेर दिया है, अब ऐसी विवादास्पद जगह "माध्यम" की समाधी नही बनेगी- और अब यह समाधी का स्थान और किसी अन्य स्थान पर चला जायेगा-

और समाधी के साथ साथ वृद्धाश्रम योजना, आयुर्वेदीक अस्पताल की योजना योगप्रशीक्षण केन्द्र, बच्चो का संस्कार केन्द्र यह सभी योजनाऐं यहाँ से दुसरे आश्रमो मे शिफ्ट की जा रही है, अब यह आश्रम का आकार अब इतनाही रहेगा- अब अन्य जमीने खरीदने की भी कोई आवश्यकता नही है। अब समर्पण ध्यान का मुख्यालय यहाँ से हटाया जा रहा है, इस सब से "नवसारी" और "दक्षीण गुजरात क्षेत्र" का कितना बडा नुकसान हुआ है; इसकी उस साधक को कल्पना भी नही है, एक अंहकार से किया गया दान कीतना घातक होता है, इसीलीये मै कहता हु दान शरीर से मत किजीये दान आत्मा से करे और जब आत्मा से दान करेगे तो दान का प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं होगी)

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(13)

अंहकार से नैतीकपतन

एक अंहकार मनुष्य का कीतना नैतीक पतन करता है, यह अंहकार का अच्छा उदाहरण है,
एक अंहकार से मेरे यह साधक के हाथ से कीतने पाप घटीत हो गये है, वह देखो

(1) गुरु के विश्वास को तोडने का पाप

(2) एक ब्राम्हण को दान दी जमीन छीनने का पाप, अधर्म

(3) संस्था का पद प्रोजेक्टलीडर का होकर प्रोजेक्ट को पुर्ण न करने का पाप

(4) न्यायालय मे केस चल रहा है, यह न बताकर "पोलीस" को धोका देने का पाप

(5) "सरकारी अधीकारीयो" को गलत सुचना देने का पाप

(6) न्यायालय की अवमानना का पाप

अब मैं भी क्या करु यह कोई वस्तु हो तो वापस भी कर दु लेकीन यह जमीन है, जहॉं हजारो साधको की आस्था जुडी है, हजारो साधको के धन और श्रम से आश्रम का निर्माण हुआ है, और साधको का हित मेरे लीये सर्वोपरी है, अब तो प्रभु से प्रार्थना है इस साधक को क्षमा करे क्योकी यह मेरा साधक नही कर रहा उसका "अंहकार" उससे करवा रहा है,

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

आप शराब से घृणा करो शराबी से नहीं, इसलीये
साधक अलग है। और अंहकार अलग है, इस विषय को
अलग² समझने की आवश्यकता है।
आप केवल इतनाही करो की आप उस साधक के समान
अपने उपर अंहकार को हावी मत होने दो उस साधक को
मै समर्पणध्यान के चार प्रमुख स्तंभ मे से एक
कहता था लेकीन वही मेरा स्तंभ विक्रम रूपी अंहकार
ने नष्ट कर दिया है।
आज भी मेरे मन मे उस साधक के साथ बीताये हुये अच्छे
पल ही है, उसके साथ की गयी मकराना मे मार्बल खरीदने
की यात्रा। प्रत्येक कार्यक्रम मे यह साधक स्वंयम होकर ही
रसोई घर संभालता था। उसे खाना बनवा कर लोगो को
खिलाना खुब अच्छा लगता था। और यह बड़े बड़े कार्यक्रमो
मे भी "कार्यक्रम" का मोह छोडकर रसोई घर मे ही
रहता था। और यह साधक जब रसोई घर मे रहता
था तो मै भोजनप्रसाद नाश्ता व्यवस्था आदी
की चिंता से मुक्त रहता था। यह साधक मेरे
आसपास शांत वातावरण रहे इसका सदैव ध्यान
रखता था। फीर वह बाबाधाम हो या यह
आश्रम हो।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

अभी जो कॉलनी के साथ आश्रम और आश्रम के साथ कॉलनी थी वह आश्रम की जमीन साधको के सामुहीक प्रयास से ही ली जाये यह मुख्य कल्पना थी। साधक प्रथम मुझे दी थी आज इसी योजना अन्य आश्रम सामुहीक प्रयास से विकसीत कर रहे है,

यह सब बाते मैं आपको इसलीये बता रहा हुं, की यह साधक बुरा नही है। इसके भितर का अंहकार बुरा है, आप तो इस अंहकार से बचे और कहते है, न की जब एक दरवाजा उपर वाला बंद करता है, तो और दस दरवाजे वह खोल देता है। अब दस दरवाजे कौनसे है। और कहा है। वह शिघ्र ही पता चलेगा,

मैं उस साधक का तब भी एहसान मानता था और आज भी मानता हुं की उसने गुरुकार्य के लीये जमीन दी। लेकीन उसका अंहकार अपेक्षा करे की सारे साधक ही उसका एहसान माने तो यह अपेक्षा करना ही गलत सामान्य साधक को क्या कोई उसे अब जानता भी नही है, क्योकी तब पुराने साधक जानते थे अब साधक संख्या लाखो मे है, जो सामने दिखता है, वह उन्हीं को मानते है, अब यह बात उसे कौन समझाये,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(14)

नया संकल्प

भगवान जो करता है, वह ठीक ही करता है, मेरा आठ मंगलमुर्तीयो का संकल्प पुर्ण हो गया था इन्ही संकल्प को पुर्ण करने को मैं सदैव समाधी अवस्था से बाहर आता था।

लेकीन इस बार अब कोई संकल्प ही बाकी नही रह गया था की जिसे सामने रखकर बाहर आया जाये इस बार तो "महाशिवराजी" को ही मैंने "समाधी" मे ही रहने का सोचा था क्योंकी जिवन के सभी कार्य तो हो गये इसी लिये मैंने उत्तराधीकारी भी घोषीत कर दिये थे लेकीन लगता है, अभी कार्य बाकी है, एक तो "समाधी" हेतु पवीत्र शुद्ध स्थान को चुनना और जो संन्देश जैन गुरुओ ने मुझे जैन मुनीयो और जैन साध्वीयो तक पहुचाने को दिया है, वह कार्य अभी बाकी है, अब इन सभी कार्यों के लीये संकल्प करता हु, क्योकी मेरे हिमालय के जैन गुरुओ ने अपने जिवन मे मोक्ष की प्राप्ती की है। और समाज के जैनमुनी और जैन साध्वी मोक्ष पाना चाहते है। और वे मोक्ष के करीब है। आसानी से दो सिडीया चढ सकते है वे दो कदम दुर है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

आप का सहयोग से ही मैं यह आठ अनुष्ठान पुर्ण कर सका और इसी लीये मैं आपका हृदय से आभारी हु।

और कीतनी ही विपदा आयी हो आप ने जो शांती और सद्भावना का परीचय दिया इसके लिये मैं आपका अत्यंत आभारी हु, आपने जो सहकार्य कीया है, वह बहुत बडा है, अगले 800 सालो तक आपके कीये गये सहकार्य से अगली पिढीया लाभान्वीत होगी इन सभी अनुष्ठानो का पुण्य आज मैं आप सब में बांटता हु। और प्रभु से प्रार्थना करता हु की आप को इसी जिवन मे मोक्ष की स्थीती प्राप्त हो क्योकी इसी के लीये आपने जन्म लीया था- आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका
बाबास्वामी
27/2/2015